मधुबन ओम् शान्ति अंक 322 मई 2019

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(10-04-19)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा परमात्म स्नेह में समाये हुए, नष्टोमोहा, एवररेडी रहने वाले, सर्व खजानों से सम्पन्न निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - मीठे प्यारे बाबा की यह वन्डरफुल अव्यक्त मिलन की सीज़न के सुहावने दिन सभी में कितना उमंग-उत्साह भर देते। इस सीज़न के 12 ही ग्रुप में भले बापदादा साकार रूप में बच्चों से मिलन मनाने नहीं पधारे लेकिन अव्यक्त वतन से सभी बच्चों को बहुत अच्छी अव्यक्ति भासना और पालना दी है। देश विदेश से आने वाले नये पुराने सभी ने अनुभव किया कैसे बाबा गुप्त रूप में बच्चों को सर्व शक्तियों से, दिव्य वरदानों से सम्पन्न बना रहे हैं। वन्डर है मीठे बाबा का जो सदा ही मधुबन में अपनी उपस्थिति का अनुभव कराते हैं। मैं तो प्रभु लीला देख-देख वाह बाबा वाह, शुक्रिया बाबा शुक्रिया... यही गीत दिल से गाती रहती हूँ। अभी मंगल मिलन के यह दिन पूरे होते ही 2019-20 के लिए स्व-उन्नति और विश्व सेवा की बड़ी मीटिंग चल रही है। सबके अन्दर बाबा को प्रत्यक्ष करने का बहुत अच्छा उमंग है। मीठे बाबा ने जो भी होमवर्क दिये हैं, उन्हें प्रैक्टिकल अपने जीवन में लाते हुए अपनी निराकारी स्थिति से निर्विकारी और निर्विकारी से निरंहकारी स्थिति बनानी है। अहंकार का जरा अंश भी न रहे, यह अटेन्शन रखना है। निश्चय बुद्धि, निश्चिंत रहने से जो रूहानी रूहाब चेहरे पर दिखाई देता है उससे दिल सच्ची है, दिमाग ठण्डा है। मैं हमेशा अन्दर से अपना रिकार्ड चेक करती हूँ कि मैं सदा अपने स्वमान में स्थित रह सबको सम्मान देती हूँ! कहते हैं खुशी जैसी खुराक नहीं, चिंता जैसा मर्ज नहीं। मन बिचारा शान्त है, तन भी देखो बाबा का बनने से मजबूत हो गया है। ऊं आं नहीं करता। संगमयुग पर इस बेहद खेल में बाबा के साथ बहुत अच्छे से अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। बाबा का नाम लेने से सब काम सहज हो जाते हैं। मैं तो कुछ नहीं करती हूँ, न करना जानती हूँ। बाबा कहता है बच्ची तुम सिर्फ ऐसे बैठ जाओ, बस। बाबा आपका मेरे लिए यही फरमान है कि श्रीमत पर चलो। कभी मनमत, परमत के प्रभाव में न चटकना, न लटकना, न अटकना।

बाबा चित चोर है। उसने मेरे चित की चोरी कर ली है इसलिए चित में कोई फिकर नहीं है, सदा ही फखुर में रहना हमारा स्वधर्म है। बाबा हमारे नयनों में बैठा है, मैं बाबा के नयनों में हूँ। ऐसी मैं खुशीनसीब आत्मा हूँ। मेरे नसीब में खुशी है। जो बाबा ने सिखाया है वही हमारी लाइफ में है। हर बात में अटेन्शन रखने से सब बातों से फ्री हैं तो ऐसे लगता है हमारे लिये तो अभी ही सुख के दिन है। अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते हैं। अभी हमारा स्वभाव ही सुख का हो गया है जैसेकि सुखदाई संस्कार बन गये हैं और कोई कामना नहीं है, नष्टोमोहा हैं, एवररेडी हैं। यहाँ मेरा कुछ भी नहीं है। मेरा बाबा है बस। इस लाइफ में लाइट रहने से बाबा ने एक्जैम्पुल बना दिया है।

बाकी हरेक का पार्ट अपना-अपना है, दो का भी एक जैसा नहीं हो सकता है। हरेक को देह से न्यारा बनना, देह में होते देही-अभिमानी स्थिति में रहना, सच्चाई और प्रेम से सबके साथ चलना, चारों ओर अच्छी भावना से अच्छे वायब्रेशन्स फैलाना, अचल अडोल रहना, वायुमण्डल को श्रेष्ठ बनाने के लिए संकल्पों की क्वालिटी बहुत अच्छी रखना। इन बातों पर विशेष ध्यान देकर चलना है। बोलो, ऐसा ही लक्ष्य रख अपनी ऊंची स्थिति बनाने का सदा ध्यान है ना। अब अपने अमूल्य समय, संकल्प और हर श्वांस को सफल कर सफलता मूर्त बनना है। अच्छा - आप सबकी तबियत ठीक होगी।

सबको बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"कन्ट्रोलिंग पावर द्वारा मन को एकाग्र कर फरिश्ता स्थिति का अनुभव करो"

1) मन की एकाग्रता अर्थात् एकरस स्थिति अव्यक्त फरिश्ता स्थिति का सहज अनुभव करायेगी। एकाग्रता अर्थात् मन को जहाँ चाहो, जैसे चाहो, जितना समय चाहो उतना समय एकाग्र कर लो। मन वश में हो।

2) साकार रूप में फरिश्ता स्थिति का अनुभव करने के लिए मन की एकाग्रता पर अटेन्शन दो, आर्डर से मन को चलाओ। मालिकपन के स्टेज की सीट पर, भिन्न-भिन्न श्रेष्ठ स्थितियों की सीट पर सेट रहो। मन में जब कोई कमजोर संकल्प उत्पन्न हो तो उसे वहाँ ही खत्म कर शक्तिशाली बनो। संकल्प रूपी फाउण्डेशन को मजबूत बनाओ तब अव्यक्ति कशिश आयेगी।

3) मन की एकाग्रता के लिए सेकेण्ड बाई सेकेण्ड ड्रामा की पटरी पर चलते रहो। जिस रीति से, जैसा ड्रामा चल रहा है उसी के साथ-साथ मन की स्थिति चलती रहे। जरा भी हिले नहीं। मन अर्थात् संकल्प शक्ति को ब्रेक लगाने और मोड़ने की पॉवर हो। इससे बुद्धि की शक्ति व्यर्थ नहीं जायेगी, इनर्जी जमा होगी। जितना मन-बुद्धि की शक्ति जमा होगी उतना परखने वा निर्णय करने की शक्ति बढ़ेगी।

4) मन को कन्ट्रोल करने के लिए मन को अर्पण कर पूरा सरेण्डर हो जाओ। फिर मन में अपने अनुसार संकल्प उठा नहीं सकते। जिसने मन भी बाप को दे दिया वह सहज मनमनाभव हो जायेंगे। मनमनाभव होने से सहज मोहजीत बन जायेंगे। मन को समर्पण करना अर्थात् व्यर्थ संकल्प, विकल्पों को समर्पण करना।

5) जब मन में कोई संकल्प उत्पन्न होता है तो उसमें सच्चाई और सफाई हो। अन्दर में कोई भी विकर्म का, भाव-स्वभाव, पुराने संस्कारों का भी किचरा नहीं हो। जो ऐसा सच्चा होगा वह सबका प्रिय होगा। ऐसे सच्चे पर साहब भी राज़ी होता है।

6) जब जैसी स्थिति बनाना चाहें वैसी स्थिति बनाने के लिए मन को ड्रिल करानी है। एक सेकेण्ड में आवाज में आयें, एक सेकेण्ड में आवाज से परे हो जाएं। एक सेकेण्ड में कार्य प्रति शारीरिक भान में आयें फिर एक सेकेण्ड में अशरीरी हो जायें। जब यह ड्रिल पक्की हो तब हर परिस्थिति का सामना कर सकेंगे।

7) समय प्रमाण अब संकल्पों को समेटने की शक्ति धारण करो, संकल्पों के विस्तार का बिस्तर बन्द करते चलो तब औरों के संकल्पों को रीड कर सकेंगे। नयनों के इशारों से भी किसके मन के भाव को जान लेंगे। जैसे बापदादा के सामने आते हो तो बिना सुनाये हुए भी आप सभी के मन के संकल्प, मन के भावों को जान लेते हैं। वैसे ही आप बच्चों को भी यह अन्तिम कोर्स पढ़ना है।

8) मन को जहाँ लगाना चाहो वहाँ लगा रहे और कहाँ प्रयोग न हो। मन के संकल्प में भी माया से हार न हो, ऐसी स्थिति बनाने के लिए शुद्ध संकल्पों में पहले से ही मन को बिजी रखो। अगर मन शुद्ध संकल्पों से भरा हुआ है तो व्यर्थ संकल्प आ नहीं सकते, हार हो नहीं सकती। शुद्ध और एकाग्र संकल्पों की शक्ति से कैसे भी वायुमण्डल को बदल सकते हो।

9) जैसे कई लोग अपने घर को सजाने के लिए अपने बचपन से लेकर, अपने भिन्न-भिन्न रूपों का यादगार रखते हैं। ऐसे आप अपने मन मन्दिर में अपने सम्पूर्ण स्वरूप की मूर्ति, भविष्य के अनेक जन्मों की मूर्तियां स्पष्ट रूप में सामने रखो फिर और कोई तरफ संकल्प नहीं जायेगा, स्वत: एकाग्र हो जायेगा।

10) जैसे जब कोई ऐसा दिन होता है तो चलते-फिरते ट्रैफिक को भी रोक कर तीन मिनट साइलेन्स की प्रैक्टिस कराते हैं। सारे चलते हुए कार्य को स्टॉप कर लेते हैं। ऐसे आप भी कोई कार्य करते हो या बात करते हो तो बीच-बीच में यह संकल्पों की ट्रैफिक को स्टॉप करने का अभ्यास करो। एक मिनट के लिए भी मन के संकल्पों को, चाहे शरीर द्वारा चलते हुए कर्म को बीच में रोक कर भी यह प्रैक्टिस करो तो संकल्प शक्तिशाली बन जायेंगे।

11) पास विद आनर वही बनते हैं जो अपने संकल्पों की उलझन अथवा सजाओं से परे रहते हैं। धर्मराज के सजाओं की तो बात पीछे है। कई बच्चे अपनी गलती से स्वयं को स्वयं ही सजा देते हैं, व्यर्थ संकल्पों की रचना कर उसमें उलझ जाते हैं फिर पुकारते हैं, मूंझते हैं, अब इससे भी परे रहने की प्रतिज्ञा करो।

12) मैजारिटी की कम्पलेन है कि कम्पलीट बनने में व्यर्थ संकल्पों के तूफान विघ्न डालते हैं। यह कम्पलेन समाप्त तब होगी जब रोज़ अमृतवेले सारे दिन के अपाइन्टमेंट की डायरी बनायेंगे। जब अपने मन को हर समय अपाइन्टमेंट में बिजी रखेंगे तो बीच में व्यर्थ संकल्प समय नहीं ले सकेंगे। तो समय की बुकिंग करने का तरीका सीखो।

13) जितना-जितना बाप की समानता के समीप आते जायेंगे तो सर्व आत्माओं के मन के संकल्पों को कैच कर सकेंगे। इसमें सिर्फ अपने संकल्पों की मिक्सचर्टी नहीं चाहिए। संकल्पों के ऊपर कन्ट्रोलिंग पावर चाहिए। जैसे बाहर की कारोबार को

कन्ट्रोल करते हो ऐसे मन के संकल्पों की कारोबार को कन्ट्रोल करो, इसके लिए सदैव स्मृति में रखो कि 1- मैं हर समय, हर सेकेण्ड, हर कर्म करते हुए स्टेज पर हूँ। 2- मेरा वर्तमान और भविष्य स्टेटस क्या है!

14) वर्तमान समय प्रमाण अब मन्सा महादानी बनो तब मन के संकल्पों पर सेकण्ड में विजयी बन सकेंगे। कोई कितना भी चंचल संकल्प वाला हो यानी एक सेकेण्ड भी उनका मन एक संकल्प में न टिक सके, ऐसे चंचल संकल्प वाले को भी अपनी विजय की शक्ति से टेम्प्रेरी टाइम के लिए भी उसे शान्त व चंचल से अचल बना दो।

15) जब आपके संकल्पों में एकाग्रता आयेगी तब संकल्प से किसको बुला सकेंगे। किसको संकल्प से कार्य की प्रेरणा दे सकेंगे। जैसे बटन दबाने से टेलीवीज़न में सारा नज़ारा सामने आ जाता है वैसे ही आप जो संकल्प, जिसके लिए करेंगे उसकी बुद्धि में वही क्लियर चित्र खिंच जायेगा। इसके लिए श्रीमत की आज्ञा जो मिली हुई है वही संकल्पों में चलती रहे और कुछ भी मिक्स न हो।

16) आप आलमाइटी गवर्मेन्ट के मैसेन्जर हो, कोई से भी डिस्कस में अपना माइन्ड डिस्टर्ब नहीं करना। किसी भी बात से अपने चेहरे पर वा मन की स्थिति में अन्तर नहीं लाना। मन्त्र सदा याद रखना। जब कोई ऐसी बात सामने आये तो अपने आत्मिक दृष्टि का नेत्र और मन्मनाभव का मन्त्र प्रयोग करना तो वह बात समाप्त हो जायेगी।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 01-12-14 *मधुबन*

''टीचर्स बहिनों के प्रश्न - दादी जानकी जी के उत्तर''

प्रश्नः- याद का चार्ट सहज और निरन्तर कैसे रहे? क्या सेवा छोड़कर हम योग में बैठ जायें?

उत्तरः- जब याद में रहना है तो और कुछ याद न आये। अगर बुद्धि और कहाँ परचिंतन आदि में फंसी है तो याद में रहना मुश्किल है। योग अलग चीज़ है। यात्रा तो उससे और ऊंची है। योगबल पवित्रता के आधार से है। दिल को बाबा की यह बात अगर लग जाये कि मैं आत्मा हूँ तो याद बड़ी सहज हो जाती है क्योंकि दिलाराम की बात दिल में जाने से और जो बातें दिल में हैं वो खाली हो गई। यह कईयों का अनुभव है। बात तो होती है पर उसके लिये सोचा, रिपीट किया, वायुमण्डल खराब हो जायेगा तो हमारा काम जो शान्त में रहने का है वो रह जायेगा। अशान्त होना, यह कोई आत्मा का धर्म नहीं है। ऐसे निज ज्ञान, असली ज्ञान जो परमात्मा हमें दे रहा है उसको दिल से स्वीकार करने से अवस्था कभी भी नीचे ऊपर नहीं हो सकती है। ऊंची स्थिति को एकरस बनाये रखना, यह शान है।

तो कार्य करते भी ध्यान से काम करो तो उस काम में सफलता होती है और बाबा की याद आती है। यज्ञ सेवा में कमाई है। यह सेवा याद में डिस्टर्ब नहीं करती है। उसमें भी चिन्तन पर सारा आधार है। और चिन्तन को खराब करने वाली है अन्दर की फीलिंग, अगर और कोई पुरानी स्मृति इमर्ज हो गई तो बस, फिर न रहेगी याद, न रहेगी धारणा।

प्रश्नः- किस पुरुषार्थ से लास्ट सो फास्ट, फास्ट सो फर्स्ट में आ सकते हैं?

उत्तरः- समय के अनुसार अब हर एक को यह महसूस होने लगा है कि रांग क्या है, राइट क्या है.. ऐसे फास्ट नहीं जायेंगे लेकिन निरन्तर अटेन्शन रहे कि बाबा वा हमारे में जो अन्तर है वो मिटता जाये। बस। इसके लिये एक तो यह पूरी अण्डरस्टैंण्डिग हो कि ज्ञान क्या है? जिसकी अण्डरस्टैण्डिग क्लीयर है, उसका जी चाहता है कि मैं यह अच्छी तरह से अभ्यास कर लूँ। दूसरा ऐसी कम्पनी में रहूँ या ऐसी कम्पनी दूँ। वो अपना समय यूँ ही व्यर्थ बातों में नहीं गंवाता है। सोल-कॉन्सेस स्थिति व्यर्थ को समाप्त करती है। फिर बाबा से शक्ति मिलती है तो आत्मा पुरानी बातों से फ्री हो फास्ट जा सकती है।

ड्रामा अनुसार सेवा तो हुई पड़ी है। इसलिये दिन रात बाबा के जो बोल हैं वो हमारे रूप में हों इसमें ही सेवा है। यह अगर हम ध्यान रखते हैं तो सेवा कल्प पहले मुआफ़िक हुई पड़ी है। अनेक आत्मायें बाबा के पास आई हैं, मैं कोई निमित्त नहीं बनी हूँ अपने आप आये हैं। कई कहते हैं मैं इसके निमित्त बनी। सेवा भी एक मकड़ी की जाल है जो याद में रहने नहीं देती है। तो हरेक अपने से पूछे मैं जाल फैलाने वाली फिर उसमें फसने वाली मकड़ी हूँ या भ्रमरी हूँ? उठाके घर में रखा, फिर दूसरे, तीसरे को...लाया, भूं-भूं किया, रंग बदला, पंख आये तो बाबा कहेगा बड़ी अच्छी बच्ची है। पंख आये अब आपेही उड़े। तो अभी चाहे पुराने या नये आँखें खोलो। पुरुषार्थ में कैचिंग पॉवर अच्छी हो, जिससे जल्दी पिकप करने में मदद मिलती है। तो अपनी बुद्धि को देखना है कि बाबा के इशारे को कैच कर... काम लायक

बन करके और जो आये उनको भी सहज करके दिया, तो यह कितनी अच्छी बात, कितना अच्छा पुरुषार्थ है। तो पुरुषार्थ के लिए शार्ट स्वीट रास्ता मिलता है, तो लम्बे चौड़े रास्ते पर क्यो जायें।

प्रश्नः- आजकल आप टक्कर और चक्कर की बात पर बहुत चर्चा करती हैं, वो क्या है?

उत्तरः- जब कोई भगवान की यह बात नहीं मानते हैं कि टाक नो ईविल, सी नो ईविल....तो वही इविल बन जाते हैं। फिर वो स्व सहित सर्व का नाश करते है। आजकल सूक्ष्म कोई न कोई प्रकार का ईविल काम करता है। अभिमान का इतना फोर्स होता है जो कुछ समझ में ही नहीं आता है कि राइट क्या, रांग क्या! कोई समझावे या ठीक से सही बतावे तो भी उन्हें गुस्सा आ जाता है फिर टक्कर तो होगा ही। टक्कर में कई प्रकार के चक्कर भी हो जाते हैं। एंजिल बनने वाली आत्मा को बड़ा धीरज रखना पड़ता है। इसके लिये यह कोई नहीं कह सकता है कि मुझे टाइम नहीं है। अन्दर से व्यर्थ बात सोचने, बोलने का टाइम है। लेकिन अपने को अच्छा समझने का, सुनने का, अभ्यास करने का टाइम नहीं है, तो कौन मानेगा?

प्रश्नः- जैसे ब्रह्मा बाबा का लास्ट में अव्यक्त रूप था, उस रूप के बारे में कुछ बातें सुनायें, उस पुरुषार्थ के लिए हम क्या युक्तियां अपनायें?

उत्तरः- बाबा को हमें साथ लेकर जाना है और हमें उनके साथ जाना है। वो आया ही है पावन सतोप्रधान बनाके साथ ले जाने के लिये और हमारे अन्दर हैं कि हम भी आपके संग चलेंगे, पीछे नहीं। सब जाने के लिए रेडी होके बैठे हैं। ब्रह्मा बाबा को देखा यहाँ बैठे भी जैसे है ही नहीं। ऐसे कई दृश्य सामने आते हैं, वो तो है विचित्र, पर यह चित्र तो सामने हैं। चित्र सामने हैं परन्तु चरित्र विचित्र है। वो अन्दर ही अन्दर इमर्ज कर सकते हैं। अभी भी देखो बाबा वाणी चला रहे हैं लेकिन लगता है जैसे यहाँ है भी, नहीं भी। कितना न्यारा कितना प्यारा, वन्डर लगता सचमुच सारा डायमण्ड हॉल देखो सब कितने जैसेकि सुन्न हो जाते हैं। सब कहीं गायब हो गये हैं, ऐसे लगता है। बाबा जैसी मौलाई मस्ती में रहना है। लक्ष्य भी हो कि हमें ऐसा बनना है तो और कोई की बात नज़रों में नहीं रहती, न सुनने का इन्ट्रेस्ट रहता, न देखने का। माना कान में आवाज आ भी रहा है परन्तु अनसुनी करके अपनी वही स्थिति बनाने में लगे रहेंगे। अपनी स्व-स्थिति को जमाना है, न कि जो स्थिति आये उसको देखना है। सुनने, देखने अनुसार हमारी स्थिति अगर रही तो उस जैसी स्थिति नहीं बनेगी।

बाबा हर बच्चे को बड़े प्यार से देखता है, किसी का नुक्स नहीं देखता है, सब अच्छे हैं। बाकी इतना जरूर है जो सच्चे हैं उसको ज्यादा प्यार करता है, इसके तो हजारों मिसाल हमारे पास होंगे। जो सच्चे हैं उस पर भगवान भी कुर्बान है। जो झूठे हैं वो अन्दर से समझते हैं, उसको यह महसूस नहीं होता है, अपने को छिपाता हूँ। वो बाबा से एक सेकेण्ड भी प्यार की वा आशीर्वाद की एक बूँद भी नहीं ले सकता। एक बारी बाबा ने यह भी कहा था कि बच्ची, इसको पता है - किसके सामने बैठा हूँ? तो ऐसों को मत लाओ सामने। सतयुग किसको कहा जाता है, जिसने उसको समझा है वो भगवान को समझा है। और जिसने भगवान को समझा है वो सतयुग को समझा है। सच जो है वो अन्दर में बल देता है। वो बल अपने आप काम करता है। उसमें हम देह-अभिमान के वश जरा-सा भी कुछ मिक्स न हो क्योंकि मिक्स है तो वो पॉवर नहीं आयेगी।

सच्चाई में रहना हमारा फर्ज़ है और शान्ति में रहना धर्म है, बाकी शक्ति देना बाबा का काम है। तो इसमें कभी भी कोई भी आगे जा सकता है इसलिये यह कभी नहीं सोचना कि यह कौन है? नहीं, इसलिये यह भावना कम नहीं करो। यह कभी नहीं कहना कि इसको हम जानते हैं, इसने कभी ऐसा पुरुषार्थ किया ही नहीं है, यह नहीं सोच सकते हैं। जो कभी न किया आज नहीं अब करेंगे। ऐसी भावना रखना माना अपने को माला से बाहर निकाल देना। कम से कम ईश्वर से स्नेह लो, परिवार को दो। दो क्या सबके साथ स्नेह से रहो। अगर यह बात हमारे ध्यान पर नहीं होगी तो दूसरे को माला में आने के लिये चांस नहीं दिया, तो हम कैसे आयेंगे?

प्रश्नः- अष्ट रत्नों की निशानियां क्या होगी?

उत्तरः- वह सबके दिलों में ईष्ट देव, ईष्ट देवियां होंगे। अपने को कहेंगे नहीं कि मैं कोई ईष्ट देव हूँ। नहीं। जो अष्ट में आने वाले हैं, जिन्हों ने एम रखी हैं। 108 में आने वाले, पहले नम्बर से 108 तक आखिर विजय पहन ली। पहले हार जीत थोड़े खेल में आये, फिर अन्त आखिर जीत में आ गये तो वैजयन्ती में आ गये। स्वमान में रहना सम्मान देना - इसमें जो परफेक्ट रहे वह वैजयन्ती में आये। जब तक यह कमी है तब तक वैजयन्ती माला में नहीं आ सकते हैं। सबको सम्मान देना यह बहुत उदारचित की निशानी है। स्वमान में रहना, एक भगवान का भाग्य मिला हुआ है। भले कोई अपमान करता है, कोई उसका दोष नहीं है पर भगवान ने हमें सीट पर बिठाया है, दिल में स्थान दिया है, नयनों में दिया है। जिस दृष्टि से भगवान ने हमें देखा, कितना नीचे से उठाके ऊंचा बनाया है वो हम नहीं भूल सकते हैं।

अष्ट में आने वालों को यही धुन लगी रहती है कि सबका भला हो, सब खुश हों, हरेक सुखी रहे... इसलिये ग्रहचारी हटाने के लिये 9 रत्न की अंगूठी पहनते हैं। उन पर कभी ग्रहचारी नहीं आयी होगी। आई भी होगी तो ऐसे चुटकी में भगाया होगा। थोड़ी-बहुत आई है, पर बैठ जावे, यह नहीं होने दिया है। दे दान छूटे ग्रहण, भगवान बचाये। एक ग्रहचारी, दूसरा विघ्न। हम ही

कोई कारण विघ्न-रूप बनी या विघ्न ने हम पर कोई असर कर दिया, तो हमारा फिर पार्ट क्या रहा? विघ्न-विनाशक ऐसे बनें जो विघ्न आया और गया, वो बैठ नहीं सकता। ऐसे अन्दर अपना ध्यान रखने वाले, विघ्न-विनाशक स्थिति में रहने वाले, अष्ट रत्न में आने के अधिकारी है।

जैसे ब्रह्माबाबा के नूर से बाबा का शरीर नज़र आया। तो ध्यान है जैसे बाबा के नूर में हमारा शरीर नज़र नहीं आता है, ऐसे हमारे यह जो नूर हैं उसमे बाबा ही नज़र आये तब बनेंगे जहाँन के नूर। नूरे जहान ही जहान के नूर बनते हैं। तो जहान को इस नूर से बाबा नज़र आये, तो 9 रत्न में आने वालों को यह धुन होती है और कुछ नहीं है। तो जो चाहे सो जिसमें आना चाहे वो आ सकते हैं। और कुछ नहीं चाहिए, यही चाहिए और इसमें समय की बहुत बलिहारी है। समय और सम्पत्ति सफल होने से थकान नहीं होगी।

स्थापना के कार्य में हमारा मन वचन कर्म श्रेष्ठ हो। आने वाली दुनिया के लिये इंतजार नहीं है, आ रही है पर पढ़ाई ऐसी बाबा पढ़ा रहा है जिससे हमको अन्दर है कि हमारी प्रालब्ध हमारे हाथों में है। पढ़ाई ही अनुभव करा रही है, संस्कार ऐसे बना रही है। सतयुगी संस्कार में पवित्रता, सत्यता, धैर्यता, नम्रता, मधुरता हो तब ही हम सतयुग में आने लायक होंगे। इन पांच बातों से औरों को भी हम सतयुग में लायेंगे। अच्छा - ओम् शान्ति।

"सदा शुभ भावना का भण्डारा भरपूर रखो, सबके प्रति शुभकामना हो, स्वार्थ नहीं"

गुल्जार दादी जी का क्लास –2005

1) हमारा अनादि स्वरूप परमधाम वासी है, आदि स्वरूप हम आदि सनातन देवी-देवता धर्म के हो। पहले ब्राह्मण पवित्र हैं, देवतायें पूज्य हैं। ब्राह्मण पवित्र बनते लेकिन न पूजा करते न कराते। अभी हम जब ब्रह्मा मुख सन्तान ब्राह्मण बने हैं तो पुजारी नहीं हैं, पर पूज्य बन रहे हैं। तो इतने पवित्र बनना है, होली बनो तो योगी बनेंगे। जो होली नहीं बनता वो योगी बन नहीं सकता। तो हो गई हो ली, बीती बात बीती हो गई, तो पवित्र हो गये। बीती बात थोड़ा भी याद आई तो अपवित्र...। किसको देह-अभिमान की दृष्टि से देखा या किसने मेरे को देखा.. क्योंकि वैष्णव ब्राह्मण को कोई टच भी नहीं कर सकते हैं, उसके आगे आ नहीं सकते हैं। तो वहम् वाली पवित्रता नहीं, सच्ची पवित्रता हो अर्थात् संकल्प में, वाणी में, कर्म में, सम्बन्ध में पवित्रता हो।

2) हमारा स्व-धर्म शान्त है, स्व-बाप आलमाइटी है, स्व-देश निर्वाणधाम है, स्व-स्वरूप सत् चित आनन्द स्वरूप है। स्व-कर्म - सुख देना और सुख लेना है। जब इन पाँचों बातों का स्पष्ट ज्ञान है तो जो सारा कूडा-किचड़ा था वो चला गया। जैसे सूर्य उदय हुआ तो रोशनी भी आई, तो किचड़ा भी गया। होली बन गये। आँख खुल गई, तीसरा नेत्र खुला तो त्रिकालदर्शी बन गये, तीनों लोकों के मालिक हो गये।

3) इन्सान बहुत जल्दी संग के रंग में अन्धकार में आ जाता है। पवित्रता क्या है, उसे यह पता ही नहीं है। अपवित्रता क्या है? पता नहीं है क्योंकि कलियुगी अन्धियारा है। पवित्र इतने बनें जो हमारे पाप कटें, पुण्य आत्मा बनें। इतना पवित्रता का बल चाहिए। जैसे कोई-कोई कीड़ा अच्छे को भी खराब कर देता है और भ्रमरी बुरे को अच्छा बना देती है। तो कभी किसी को बुरा देखना यह भ्रमरी का काम नहीं है, ब्राह्मणी का काम नहीं है। बदलना उसका काम है, औरों को बदलने में मदद करना उसका काम है। हमारे पास इतनी शुभ भावना शुभ कामना हो जो हमारे लिए अगर कोई अशुभ सोचे तो भी वो हमें लगेगा नहीं क्योंकि हरेक के लिए शुभ भावना का भण्डारा भरपूर है।

4) हमारे प्रति कोई कैसे भी सोचता है, आपेही ठीक हो जायेगा। कोई बड़ी बात नहीं है, पर हम अपनी शुभ भावना में कोई कमी नहीं करेंगे। यह हमारे लिए शान नहीं है। शान यह है हम अपनी भावनाओं को सदैव सबके लिए बाबा जैसी शुभ बनायें। सबके प्रति श्रेष्ठ कामना हो, कोई स्वार्थ न हो। वह आत्मा जैसे बाबा की दृष्टि से बदल जाए, यह कामना है। बाकी हम क्या दृष्टि देंगे। जैसे बाबा दृष्टि देता है तो तुम बाबा से दृष्टि लो - यह भावना है। हम दृष्टि नहीं देंगे, जैसे बाबा मेरे को दृष्टि से चला रहा है, ऐसे आप भी बाबा की दृष्टि में रहो तो आपके ऊपर किसकी नज़र नहीं पड़ेगी। न आपकी नज़र औरों पर पड़ेगी।

5) अगर भोजन पर किसी की खराब नज़र पड़ जाती है तो वह खाना हम नहीं खा सकते क्योंकि उसमें इच्छा होगी, कोई भी निगेटिविटी होगी तो उसका प्रभाव शरीर को बीमार कर देगा इसलिए बाबा हमेशा कहते हैं बच्चे भोजन का भोग लगाके फिर खाओ और पहले सब खायें, फिर तुम खाओ, यह सभ्यता भी यहाँ बाबा सिखा रहे हैं। ऐसे नहीं मैं खा लूँ और किसी की इच्छा हो खाने की, वो खाना अन्दर नहीं जायेगा, जायेगा तो भी हज़म नहीं होगा। तो हम खाऊं, हमको मिलें... नहीं, सबको मिलें,

सब खायें।

6) मुझे अन्दर से सच्ची दिल से साहेब को राज़ी रखने का पुरुषार्थ करना है। साहेब तब राज़ी होता है, जब हम उनके डायरेक्शन, उनकी श्रीमत, उनके इशारे प्रमाण चलते हैं। तो हमारी बुद्धि में क्लीयर डायरेक्शन्स हो, तब हम टाइम पर सबकुछ कर सकेंगे। दूसरे का भी टाइम बचाए, उसको मदद कर सकते हैं तो इतना तो सीखना पड़ेगा।

7) आजकल बाबा हर बात में कहता है - विघ्न-विनाशक बनने की डिग्री पास करो। विघ्न आवे ही नहीं, आया तो यह खेल है, क्या बड़ी बात है। खेल में खेल तो होता ही है। पर खेल समझ करके खुश रहें। उदास न रहें, थोड़ी उदासी आई माना ड्रामा का ज्ञान नहीं है, अपवित्रता आई। अपवित्रता ने उदासी लाई तो मेरी खुशी कम कर दी। भगवान मुझे खुशी देवे, तो सदा खुश रहने की साधना वा साधन है पवित्र संकल्प। तो अपने संकल्प को चेक करो, अपने ऊपर मेहर करके किसी के भी भाव स्वभाव में नहीं आओ।

8) यह अच्छा है, यह खराब है... यह भी अपवित्र संकल्प है, जिसने जिसको अच्छा कहा वो उसके ऊपर आशिक है और उसने समझा हाँ यही मुझे अच्छा समझते हैं तो वो हुआ आशिक, तो उन दोनों का माशूक छूट गया। अपने आपको ज़रा ऊपर से बाबा की तरह देखो तो लगेगा कि यह दोनों आपस में आकर आशुक हो गये हैं। सबका माशूक वो रह गया, उन जैसा अच्छा कोई नहीं, यह भूल गया। हम ब्रह्मा मुख-वंशावली ब्राह्मण हैं तो इतनी ही पवित्रता बाबा हमारे से चाहता है।

9) हम सबके अन्दर बाप समान बन एक साथ बहुतों को धक से सुख देने की इच्छा है। बाबा भी कहते हाँ बच्चे दे सकते हो। अनादि और आदि दोनों बाप इकट्ठे होकर के बिछड़ी आत्माओं को प्यार से अपना बना करके कहते हैं कि मेरे बच्चे पवित्र बनो, योगी बनो। और कुछ भी न करो सिर्फ शान्त रहके बार-बार यही अभ्यास करो। जब साइलेंस में होंगे तो बाबा मुख से नहीं निकलता है क्योंकि वो साइलेंस की शक्ति दे रहा है, पवित्रता का बल आत्मा में भर रहा है इसलिए दिल से निकलता है - बाबा 84 जन्म साथ रहेंगे। एक जन्म तो क्या, एक वर्ष भी हम कम नहीं रहेंगे।

10) हमें तो नशा हो कि यह साकार, अव्यक्त, निराकार तीनों मेरे हैं। तो कभी भी चेहरा ऐसा वैसा नहीं करेंगे। यह निरादर भी है तो अपवित्रता भी है। तो जो बाबा की याद में प्यार से रहने वाला है, उनमें किसी भी प्रकार की अशुद्धि (अपवित्रता) नहीं होगी क्योंकि किसकी शक्ल ऐसे मुरझाई हुई होती है तो वहम् और रहम पड़ता है।

11) संगम पर बाबा बच्चों को पावन बना करके राजाई देने के लिए बंधायमान हो गया है। बाबा हमको इतनी बड़ी राजाई देवे लेकिन हम सतयुग के लायक तो बनें। शुद्ध शान्त तो रहें। बाबा से इनाम लेना हो तो अभी परिवर्तन हो जाओ, पुरानी बातों को विदाई दे बधाईयाँ लो। जो भी किसी के पास पहली और पुरानी बात हो उसे खत्म कर दो। आज भोग लगा दो। मनसा, वाचा, दृष्टि, वृत्ति सदा सबके हितकारी, सबका भला हो। जैसे बाबा ने मेरा भला किया है, अभी ऐसे सबका भला हो। किसके लिए भी हमें अशुभ सोचना ही नहीं है।

12) सेवा में या स्व-उन्नति में अलबेले की नेचर बड़ा नुकसानकारक है, बहाने की आदत है तो यह भी अपवित्रता है, सुस्ती भी अपवित्रता है। और यह सब सुनते-सुनते नींद आ जाए तो यह भी अपवित्रता है माना अन्दर में कुछ दाल में काला है। जो इतना बाबा अच्छी तरह से खजाना देवे फिर भी हम लेवे नहीं तो क्या कहेंगे। अब लो और बाँटों। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

"पुराने संस्कारों से मुक्त रह जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करो"

1) जब से शिवबाबा के इस विश्व-विद्यालय में हम दाखिल हुए वह तारीख ही हमारे अलौकिक बर्थ डे की तारीख है। उस घड़ी से हमारा सम्बन्ध अलौकिक बन गया। वृत्ति-वायब्रेशन भी अलौकिक हो गये। ऐसी कोई युनिवर्सिटी नहीं जहाँ हर एक को ईश्वरीय मर्यादा के कंगन में बांधा जाए। यहाँ हमें वह कंगन बांधा गया। बापदादा का हमें यह-यह आदेश है, यह-यह नियम हैं। उस समय से ही हम सबने यह दृढ संकल्प लिया कि हमें अनेक आत्माओं का और स्वयं के जीवन का नव निर्माण करना है।

2) हम सब मुसाफिर हैं। नांव में बैठे हैं। हमें मजधार से पार करने वाला खिवैया स्वयं सर्व शक्तिवान परमप्यारा हमारा बाबा है। डोरी उनके हाथ में है। वह कहता है नईया चलेगी, आंधी तूफान आयेंगे लेकिन घबराना नहीं। आंधी तूफानों से पार होने वाले का नाम है महावीर। अपना पांव नईयां से मरने तक भी उतारना नहीं है। यह तो पक्का ही है। सवाल यह है कि अपनी अलौकिक जीवन पक्की है?

3) हम सभी अष्ट भुजाधारी हैं, हमारी अष्ट भुजाओं में अष्ट शस्त्र हैं। वह हैं अष्ट शक्तियाँ। तो चेक करो – मेरी भुजायें बरोबर हर शस्त्र को पकड़े हुए हैं? कोई टूट फूट तो नहीं गया है? रोज़ अमृतवेले देखो हम अष्ट शस्त्रधारी हैं। जैसे सवेरे-सवेरे अमृतवेले ताकत के लिए माजून खाते, वैसे अपनी अष्ट शक्तियों को अपने पास दौड़ाओ। ऐसे भी नहीं कोई शक्ति ज्यादा और कोई कम हो। चेक करो सभी शक्तियाँ समान हैं या कम ज्यादा? कोई का पेच ढीला तो नहीं है? जैसे कार चलते-चलते खड़ी तभी होती जब पेट्रोल नहीं फेकती, कारण होता पेट्रोल में थोड़ी सी मिट्टी। ऐसे ही अगर हमारे में थोड़ी भी कमजोरी है तो हम अलौकिक जीवन का आंनद नहीं ले सकते।

4) हम सब ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारी पुराने संस्कारों से, पुरानी आदतों से मुक्त जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करते हैं? जो अभी संस्कारों से मुक्त है वही मुक्ति जीवनमुक्ति पा सकते हैं। तो पहले चेक करो कि मैं सारे दिन में कितना समय मुक्त रहता हूँ? अपने संस्कारों से मेरी स्थिति मुक्त रहती है? या मैं वर्सा तो जीवनमुक्ति का ले रहा हूँ परन्तु अभी मैं संस्कारों के बन्धन में बंधा हुआ हूँ? मैं लौकिक से निकल अलौकिक जीवन, अलौकिक दुनिया निर्माण करने वाला, अलौकिक संस्कार वाला ब्रह्माकुमार हूँ या शूद्र कुमार हूँ?

5) कभी मैं स्व के अलंकार छोड़ दूसरे को दोषी तो नहीं बनाती? इसने ऐसा किया तो मैंने किया, इसने बोला तो मैंने भी बोला। मै उसे कहती इसमें तुमने अपनी शक्ति क्या दिखाई! बाबा ने कहा है – बच्चे तुम पुण्य आत्मा हो तो मेरे कदम-कदम से, खाने से, पीने से, बोलने से, चलने से सबसे पुण्य होता है? पुण्य करते-करते कोई पाप तो नहीं कर लेते हो जिससे सौगुणा दण्ड पड़ जाए? मुझे सदा यही फुरना (फिकर) रहता – कि मुझसे ऐसा कोई व्यवहार वा बोल-चाल न हो जाए जो धर्मराज के आगे झुकना पड़े। यही मुझे डर है, बाकी मैं किससे डरती नहीं, दुश्मन मेरा रावण है। बाकी सब मित्र हैं। रावण को भी प्यार से कहती – ओ रावण अब तेरा राज्य पूरा हुआ। अब तू विदाई ले। उसे भी हम डांटकर नहीं भगाते। जब हम शीतल बन जाते तो वह आपेही चला जाता है। रावण बिचारा है, हम कोई बिचारे नहीं। अब तो उसका राज्य जा रहा है, मेरे बाबा का राज्य आ रहा है – इसलिए मुझे किसी से डर नहीं।

6) आज हरेक अपनी डायरी में नोट करो कि मैं पुराने संस्कारों से मुक्त हुआ हूँ? अगर संस्कार कभी इमर्ज हों तो समझो संस्कारों के वश हैं तो वह जेल में बंधायमान हैं। जब कोई कहता मैं क्या करूँ, मेरे संस्कार हैं ना! तो मुझे उसके ऊपर बहुत तरस आता है। मैं कहती तुम इस सुहावने संगम की स्वर्णिम लॉटरी को क्यों खत्म करते हो? जब सहारा मेरा बाबा है, तो उसका सहारा छोड़ संस्कारों का सहारा क्यों लेते हो? उन्हें क्यों प्रधान बनाते? तुम लेके सहारा बाबा का इन सबको खत्म करो।

7) कोई राजा भी जब हार खा लेता तो हथियार आदि सब सरेण्डर कर देता है। हमें अपने संस्कारों को सरेण्डर कर देना है। जो अपने संस्कारों को बाबा के चरणों में सरेण्डर करता वही राजतिलक पाता है। संस्कारों को मार दो तो सब झगड़े समाप्त हो जायेंगे। अच्छा।

कार्यशाला
सफलता का आधार - त्याग और तपस्या

त्याग की परिभाषा

1. कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है, इसको ही त्याग कहते हैं।
2. अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जो बाधक हैं, जैसे अपनी कोई मन-पसन्द आदत है, वस्तु हो या कुछ भी हो, उसे छोड़ना, इसे ही त्याग कहा जाता है।
3. त्याग का भी त्याग करना, सबसे ऊंचा त्याग है।
4. त्याग करके फिर उसका वर्णन न करना ही त्याग है।

त्याग तीन प्रकार का होता है

1. सतो त्याग - स्वइच्छा से त्याग
2. रजो त्याग - किसी के कहने पर त्याग
3. तमो त्याग - मजबूरी से त्याग

त्याग किन किन बातों का होना चाहिए?

1. देह अभिमान का त्याग
2. वस्तु वैभव का त्याग
3. मान-शान का त्याग
4. संग्रह वृत्ति का त्याग
5. अपनी पसन्दगी का त्याग
6. मनमत का त्याग ..... आदि ... आदि....

तपस्या की परिभाषा

1. श्रेष्ठ लक्ष्य को दृढ़ता पूर्वक हांसिल करने के लिए किये गये परिश्रम अथवा साधना वा अभ्यास को ही तपस्या कहा जाता है।

2. एक के अंत में खोना ही तपस्या है।
3. तपस्या माना स्व-परिवर्तन
4. तपस्या माना सर्व बन्धनों से मुक्त रहना
5. तपस्या माना अपनी आन्तरिक स्थिति को पावरफुल बनाना।
6. दधीचि ऋषि मिसल यज्ञ में हड्डी-हड्डी स्वाहा करना ही तपस्या है।
7. तेरे-मेरे, वस्तु-वैभव, व्यक्ति आदि के आकर्षण से परे रहना ही तपस्या है।
8. विदेही बनने का अभ्यास करना ही तपस्या है।
9. ईमानदारी से जिम्मेदारी को निभाना भी तपस्या है।
10. ''जैसा कर्म मैं करुंगा मुझे देखकर और करेंगे'' यह बात याद रखते हुए कर्म करते जाना ही तपस्या है।
11. कहावत है सच जैसा तप नहीं, झूठ जैसा पाप नहीं तो जीवन भर सच्चाई की राह पर चलते जाना भी तपस्या है।
12. आज्ञाकारी - वफ़ादार होकर रहना भी तपस्या है।
13. सहन करना भी तपस्या है।
14. नियम संयम युक्त जीवन भी तपस्या है।
15. किसी भी हालत में मर्यादाओं की लकीर को उल्लंघन न करना भी तपस्या है।
16. कर्मेन्द्रियों को शीतल शान्त बनाना भी तपस्या है।
17. पावरफुल ब्रेक लगाना भी तपस्या है।
18. तपस्या माना व्यक्तित्व में निखार आना।
19. तपस्या माना बीती को बिन्दी लगाना।

सफलता की परिभाषा

1. अपने लक्ष्य को विधिपूर्वक प्राप्त करना ही सफलता है।
2. श्रेष्ठ इच्छाओं की पूर्ति ही सफलता है।
3. सन्तुष्टता के तीनों सर्टीफिकेट प्राप्त हो, इसको भी सफलता कहा जाता है।
4. जिस कार्य से आत्मा को वैल्यूज़ की प्राप्ति होती है, उसे भी सफलता कहा जाता है।
5. जिस कार्य से सर्व का कल्याण होता है, ऐसा कार्य करना भी सफलता है।
6. ऐसा कर्म करना जिससे सर्व की दुआयें मिलें उसे भी सफलता कहा जाता है।
7. मन-वचन-कर्म तीनों समान किया हुआ कर्म सफल कर्म है।
8. प्रेरणादायक कर्म करना भी सफलता प्राप्त करना है।

त्याग और तपस्या का आपस में सम्बन्ध

1. त्याग बिना तपस्या नहीं। त्याग से ही भाग्य बनता है।
2. त्याग से बेहद की वैराग्य वृत्ति वा उपराम वृत्ति आती है जिससे तपस्या सफल होती है।
3. जैसे नींद का त्याग करें तो हम योग कर सकते हैं, जैसे चटपटा भोजन वा अधिक भारी भोजन का त्याग करें तो हम अमृतवेले अच्छी तपस्या कर सकते हैं।
4. त्याग से नि:स्वार्थ वृत्ति आती है।
5. त्याग से इच्छायें कम होती है।
6. त्याग से विशाल दिल बनती है, और संकीर्णता से ऊपर उठते हैं।
8. त्याग से कन्ट्रोलिंग और रूलिंग पावर आती है, जो तपस्या के लिए नींव है।
9. त्याग से संगठन मजबूत होता है, स्नेह और सहयोग का वातावरण बनता है, जिससे तपस्या का वातावरण पावरफुल होता है।
10. त्याग जहाँ हमें न्यारा बनना सिखाता, वहाँ हर परिस्थिति में स्वयं को मोल्ड होना भी सिखाता जिससे तपस्या अटूट हो सकती है।
11. त्याग से दृढ़ता आती है और दृढ़ता ही तपस्या का आधार है।

त्याग तपस्या से सफलता कैसे मिलती है?

1. त्यागी और तपस्वी की बातों को सब दिल से ग्रहण करते हैं।
2. त्यागी और तपस्वी के अपने पुराने संस्कार बिल्कुल मिट जाते हैं और संगठन में हर परिस्थिति में वह अचल-अडोल रहता है जिससे सफलता मिलती है।
3. त्याग-तपस्या से प्रकृतिजीत, मायाजीत बनते हैं।
4. त्याग-तपस्या से अपकारियों के ऊपर भी उपकार करने की शक्ति आती है तो सेवा में सफलता मिलती है।
5. त्याग-तपस्या से हम बेहद में चले जाते हैं, कर्मेन्द्रियां शीतल होती तो हमारा व्यक्तित्व प्रभावशाली बनता है, जिससे सहज सफलता मिलती है।
6. त्याग-तपस्या के आधार पर हम डबल-लाईट रहते हैं जिससे कार्य-कुशलता आती है, जिससे सहज सफलता मिलती है।
7. त्याग-तपस्या के आधार पर ही बाबा की प्रत्यक्षता हो सकती है।
8. त्याग-तपस्या के आधार से वातावरण शुद्ध होता है।
9. त्याग-तपस्या के आधार पर ही हम मा. सर्वशक्तिमान बनते हैं जिससे हम सम्पूर्ण विजयी बन सकते हैं।